विचार बिन्दु

अज्ञानी होना मनुष्य का असाधारण अधिकार नहीं है बल्कि स्वयं को अज्ञानी जानना ही उसका विशेषाधिकार है। –राधाकृष्णन

शोर में डूबता भारत: विकास की कीमत या अव्यवस्था का परिणाम?

सुबह के पांच बजे हैं। शहर अभी पूरी तरह जागा नहीं है, लेकिन लाउडस्पीकर की तेज़ आवाज़ नींद की आख़िरी परत को भी चीर देती है। थोडी देर में सड़कों पर वाहनों की कतारें लग जाती हैं और हर चालक जैसे अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए हॉर्न को हथियार की तरह इस्तेमाल करता है। दिन ढलते-ढलते निर्माण स्थलों का शोर, बाजारों की चहल-पहल और रात होते-होते शादी-ब्याह के डीजे की कर्कश ध्वनियाँ-यह सब मिलकर एक ऐसा वातावरण रचते हैं जिसमें 'शांति' अब एक विलुप्त होती अनुभूति लगने लगी है। सवाल यह है कि क्या यही आधुनिक भारत की पहचान है, या यह हमारी सामूहिक असंवेदनशीलता का परिणाम है?

ध्वनि प्रदूषण, जिसे अक्सर हम एक सामान्य असुविधा मानकर नज़रअंदाज़ कर देते हैं, दरअसल एक गंभीर पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी संकट है। वैज्ञानिक दृष्टि से, 55 डेसिबल से अधिक की ध्वनि दिन में और 40 डेसिबल से अधिक की ध्वनि रात में हानिकारक मानी जाती है। लेकिन भारत के अधिकांश शहरी क्षेत्रों में यह स्तर नियमित रूप से 80 से 100 डेसिबल तक पहुँच जाता है। यह अंतर केवल आँकड़ों का नहीं, बल्कि हमारे जीवन की गुणवत्ता के गिरते स्तर का संकेत है।

भारत में ध्वनि प्रदूषण की समस्या का सबसे बड़ा कारण हमारी बदलती जीवनशैली और उससे उपजी 'शोर-संस्कृति' है। ट्रैफिक इसका सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण है। हॉर्न बजाना यहाँ केवल चेतावनी देने का माध्यम नहीं, बल्कि अधीरता, प्रतिस्पर्धा और कभी-कभी आक्रामकता का प्रतीक बन चुका है। ट्रैफिक जाम में फंसे लोग मानो यह मान लेते हैं कि लगातार हॉर्न बजाने से रास्ता अपने आप खुल जाएगा। हालत यह है कि अगर आपने लाल बत्ती पर अपना वाहन रोक रखा है तो भी आपके पीछे खड़े वाहन का चालक बार-बार हॉर्न बजाकर आपको चलने के लिए उकसाता रहेगा। भयंकर ट्रैफिक जाम में भी, जहां आगे बढ़ने की कोई सम्भावना ही नहीं होगी, लोग हॉर्न बजाए जाएंगे।

इसके साथ ही, धार्मिक और सामाजिक आयोजनों में ध्वनि के अंधाधुंध उपयोग ने स्थिति को और जटिल बना दिया है। आस्था और उत्सव जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन जब वे सार्वजनिक असुविधा का कारण बनने लगें, तो उनके स्वरूप पर पुनर्विचार आवश्यक हो जाता है। लाउडस्पीकरों का अनियंत्रित प्रयोग, चाहे वह किसी भी समुदाय या अवसर से जुड़ा हो, एक ऐसी प्रतिस्पर्धा को जन्म देता है जिसमें 'कौन अधिक तेज़' की होड़ लग जाती है। हमने जैसे मान लिया है कि अपने आराध्य में अपनी श्रद्धा के प्रदर्शन का सबसे ज़्यादा कारगर तरीका यही है कि लाउडस्पीकर को जितनी तेज़ आवाज़ में सम्भव हो उतनी तेज़ आवाज़ में बजाकर पूरे मोहल्ले को बताते रहें। ऐसा किसी एक धर्म के अनुयायी नहीं करते हैं। इस मामले में जैसे कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता है। खुशी मनाने का कोई भी मौका, चाहे वह जन्म दिन हो, किसी भी तरह की वर्षगांठ हो, सगाई शादी हो, रिटायरेमेण्ट हो, प्रोमोशन हो- कुछ भी हो, कान फोड़ू तथाकथित संगीत के बग़ैर सार्थक नहीं माने जाते। तथाकथित मैंने जानबूझकर कहा है क्योंकि जब लाउडस्पीकर को उसकी क्षमता से ज़्यादा ऊंची आवाज़ में इस्तेमाल किया जाता है तो अच्छे से अच्छा संगीत भी कर्कश हो उठता है। खुशी मनाने वाले को संगीत से, उसके सुरीलेपन से कोई लेना-देना नहीं होता। वह तो बस आस-पास वालों के कानों पर अत्याचार करके खुशी मना लेना चाहता है। कर्कशता का इस्तेमाल केवल लाउडस्पीकर से निकली आवाज़ के रूप में ही नहीं होता, जुलूसों, बारातों वगैरह में बजने वाले बैण्ड का भी यही आलम होता है। बहुत कम बैण्ड होते हैं जिनका संगीत आपको आनंदित करता है। अधिकांश तो बस ढमढमाढमढम ही होते हैं।

शहरीकरण और विकास के नाम पर चल रहे निर्माण कार्य भी इस समस्या में बड़ा योगदान देते हैं। महानगरों से लेकर छोटे कस्बों तक, हर जगह इमारतें खड़ी हो रही हैं, लेकिन उनके साथ उठने वाला शोर किसी की चिंता का विषय नहीं बनता। निर्माण करवाने वालों को कब्ही इस बात की फिक्र नहीं होती कि उनके कारण आस पास वालों को कितनी असुविधा हो रही है। निर्माण के शोर को नियंत्रित करने के जो प्रयास किए जा सकते हैं वे भी शायद ही कोई करता हो। राजनीतिक रैलियाँ और चुनावी प्रचार भी इस सूची में शामिल हैं, जहाँ ध्वनि का उपयोग अक्सर शक्ति प्रदर्शन के साधन के रूप में किया जाता है। असल में धर्म और राजनीति में तो शोर का इस्तेमाल पूरी दादागिरी से किया जाता है। किसकी मज़ाल है जो इनके शोर के बारे में उफ तक भी करे!

> **ध्वनि प्रदूषण का एक कम चर्चित लेकिन महत्वपूर्ण पहलू इसका पर्यावरण पर प्रभाव है। पक्षियों और अन्य जीव-जंतुओं के लिए ध्वनि केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि अस्तित्व का आधार होती है। अत्यधिक शोर उनके प्राकृतिक व्यवहार को बाधित करता है, जिससे उनके प्रजनन और जीवन चक्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लेकिन जो समाज मनुष्यों को होने वाली असुविधाओं की ही परवाह नहीं करता, उस समाज से यह उम्मीद करना कि वह पशु पक्षियों की फिक्र करेगा, बेमानी ही है।**

इस निरंतर शोर का प्रभाव केवल हमारे कानों तक सीमित नहीं रहता। यह हमारे शरीर और मन दोनों को प्रभावित करता है। लंबे समय तक अत्यधिक ध्वनि के संपर्क में रहने से सुनने की क्षमता कम हो सकती है, उच्च रक्तचाप और हृदय संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, और नींद में बाधा आने से मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। बच्चों में यह एकाग्रता को प्रभावित करता है, जबकि बुजुर्गों और बीमार व्यक्तियों के लिए यह स्थिति और भी अधिक कष्टदायक होती है।

ध्वनि प्रदूषण का एक कम चर्चित लेकिन महत्वपूर्ण पहलू इसका पर्यावरण पर प्रभाव है। पक्षियों और अन्य जीव-जंतुओं के लिए ध्वनि केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि अस्तित्व का आधार होती है। अत्यधिक शोर उनके प्राकृतिक व्यवहार को बाधित करता है, जिससे उनके प्रजनन और जीवन चक्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। लेकिन जो समाज मनुष्यों को होने वाली असुविधाओं की ही परवाह नहीं करता, उस समाज से यह उम्मीद करना कि वह पशु पक्षियों की फिक्र करेगा, बेमानी ही है।

यह नहीं है कि इस समस्या से निपटने के लिए कानून मौजूद नहीं हैं। भारत में ध्वनि प्रदूषण (नियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 लागू हैं, और उच्चतम न्यायालय ने भी रात 10 बजे के बाद लाउडस्पीकरों पर प्रतिबंध जैसे महत्वपूर्ण निर्देश दिए हैं। अस्पतालों, स्कूलों और न्यायालयों के आसपास 'साइलेंस ज़ोन' घोषित किए गए हैं। लेकिन समस्या यह है कि ये नियम कागज़ों तक ही सीमित रह जाते हैं। प्रशासन की ढिलाई और नागरिकों की उदासीनता मिलकर इन्हें प्रभावहीन बना देती है। मोहल्लों में रात दस बजे बाद भी ज़ारी रहने वले धार्मिक या सामाजिक आयोजन अपवाद नहीं हैं। अगर आप जाकर किसी से विनम्रता से भी अनुरोध करें तो वह इसे आपकी अनधिकार चेष्टा मानकर अपने गुस्से का इज़हार करने से नहीं चूकेगा। और रही बात, पुलिस की, तो वह पहले से अन्यान्य कामों में इतनी व्यस्त होती है कि इस तरह की मामूली शिकायतें उसके लिए उपेक्षणीय ही होती हैं।

वास्तविकता यह है कि ध्वनि प्रदूषण केवल प्रशासनिक विफलता का परिणाम नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक मानसिकता का भी प्रतिबिंब है। हम में से अधिकांश लोग तब तक शोर को समस्या नहीं मानते, जब तक वह हमारे व्यक्तिगत दायरे में हस्तक्षेप नहीं करता। यह 'मेरे लिए ठीक है' वाला दृष्टिकोण ही इस समस्या को और गहरा करता है।

समाधान की दिशा में सबसे पहला कदम यही है कि हम ध्वनि को एक गंभीर मुद्दे के रूप में स्वीकार करें। प्रशासन को नियमों के पालन में सख्ती दिखानी होगी, जुर्माने बढ़ाने होंगे और नियमित निगरानी सुनिश्चित करनी होगी। लेकिन इससे भी अधिक आवश्यक है सामाजिक जागरूकता। 'नो हॉर्न' जैसे अभियानों को केवल प्रतीकात्मक न बनाकर व्यवहार का हिस्सा बनाना होगा।

व्यक्तिगत स्तर पर भी हमारी जिम्मेदारी कम नहीं है। अनावश्यक हॉर्न बजाने से बचना, आयोजनों में ध्वनि की सीमा का ध्यान रखना, और दूसरों की शांति के अधिकार का सम्मान करना-ये छोटे-छोटे कदम मिलकर बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

आखिरकार, यह समझना होगा कि विकास केवल भौतिक प्रगति का नाम नहीं है। उसकी असली पहचान उस संवेदनशीलता में होती है, जो एक समाज अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता के प्रति दिखाता है। यदि हमने समय रहते शोर को नियंत्रित नहीं किया, तो वह दिन दूर नहीं जब हम एक ऐसे समाज में रह रहे होंगे जहाँ आवाज़ें तो बहुत होंगी, लेकिन सुनने की क्षमता और इच्छा दोनों खो चुकी होंगी।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

चप्पा-चप्पा भाजपा: चुनावी नारे से भारत की धड़कन बनने तक का सफर

(6 अप्रैल : भारतीय जनता पार्टी स्थापना दिवस पर विशेष)

डॉ. योगेश शर्मा

भारत की बहुदलीय लोकतात्रिक राजनीति में अधिकांश दल केवल चुनावी मशीनरी और सत्ता-संघर्ष तक सीमित रह जाते हैं, लेकिन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने समय के साथ स्वयं को एक व्यापक वैचारिक आंादोलन के रूप में स्थापित किया है। 6 अप्रैल 1980 को स्थापित भाजपा आज न केवल 10 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है, बल्कि 150 करोड़ भारतीयों की आस्था, विश्वास और ड़िकन के रूप में भी स्थापित हो चुकी है। यह यात्रा केवल सत्ता प्राप्ति की नहीं, बल्कि विचार, संगठन और संकल्प की निरंतरता की कहानी है। सबका साथ, सबका विकास, विकसित भारत का अमृत काल, मेक इन इंडिया, स्वच्छ भारत मिशन, सेंट्रल विस्टा प्रोजेक्ट, सेवा तीर्थ, नारी शक्ति वंदन अधिनियम, भारतीय न्याय संहिता का निर्माण जैसे अनेक कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से भाजपा ने एक नए भारत के निर्माण का संकल्प साकार किया है।

भाजपा के इतिहास को देखें तो उसकी नींव भारतीय जनसंघ के मजबूत विचारों में निहित है जिसकी स्थापना श्यामा प्रसाद मुर्खजी ने 1951 में की थी। जनसंघ ने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को बनाए रखने का कार्य किया, दीनदयाल उपाध्याय के 'एकात्म मानववाद' ने इसमें बौद्धिक आयाम जोड़े। 1975 में तत्कालीन इंदिरा गांधी सरकार द्वारा लगाए गए आपातकाल और निरंकुश अलोकतांत्रिक रवैये के पश्चात 1977 में लोकतांत्रिक मूल्यों की पुर्नस्थापना के लक्ष्य के साथ भारतीय जनसंघ जनता पार्टी गठबंधन में शामिल हुआ। जनता पार्टी सरकार के साथ गठबंधन के बावजूद जब राष्ट्रवादी प्रतिबद्धता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव पर प्रश्न उठे, तब जनसंघ ने राष्ट्रवाद को प्राथमिकता दी। जनता पार्टी सरकार के विघटन के बाद, 6 अप्रैल 1980 को जनसंघ ने स्वयं को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के रूप में प्रस्तुत किया। 1984 के लोकसभा चुनाव में मात्र दो सीटों तक सिमटी भाजपा ने हार को निराशा नहीं, बल्कि संघर्ष का आधार बनाया। 1996 में पहली बार भाजपा को केंद्र में सरकार बनाने का अवसर मिला, हालांकि वह दौर गठबंधन की अस्थिर राजनीति का था। 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में एनडीए सरकार ने स्थिरता और सुशासन का उदाहरण प्रस्तुत किया। 2014 के बाद भाजपा ने भारतीय राजनीति में एक नया अध्याय लिखा, जब पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनी और 2026 तक तीसरे कार्यकाल में भी उसका प्रभाव कायम है। सांसद के दोनों सदनों में अपने दम पर बहुमत प्राप्त करने के साथ-साथ भारत के अधिकांश राज्यों में स्वयं या अपने सहयोगियों के साथ सरकार चला रही भाजपा ने एक-दलीय प्रधानता को गठबंधन राजनीति के साथ समन्वित करते हुए संघवाद की मर्यादा को बनाए रखा है। भाजपा की पाँच निष्ठाएँ-राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय अखंडता, लोकतांत्रिक, सर्वधर्म समभाव से युक्त सकारात्मक पंथनिरपेक्षता, गांधीवादी समाजवाद और मूल्य आधारित राजनीति-उसकी वैचारिक दिशा को निर्धारित करती हैं। यह वही भाजपा है जिसने भारत की विविध सांस्कृतिक संरचना को संरक्षण देते हुए राष्ट्रवाद का प्रखर उद्घोष किया है, वह भी बिना किसी तुष्टिकरण के। भाजपा की अधिकारिक वेबसाइट पर भी यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल है, जो भारत को एक सुदृढ़, समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारत को विश्व गुरु बनाने के संकल्प के साथ भाजपा ने इतिहास को केवल स्मृति तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे वर्तमान और भविष्य के निर्माण से जोड़ा।

भाजपा की सबसे बड़ी विशेषता कार्यकर्ता-आधारित संस्कृति है, जहाँ शीर्ष नेता भी स्वयं को कार्यकर्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं। चाहे बात भाजपा के पहले अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी की हो, या भाजपा के वर्तमान अध्यक्ष नितिन नबीन की; या फिर लालकृष्ण आडवाणी और भैरों सिंह शेखावत जैसे वरिष्ठ नेताओं की हो; या भाजपा के 'चाणक्य' कहे जाने वाले अमित शाह की-या फिर भारत के सबसे बड़े प्रदेश को माफिया के आतंक से मुक्त करने वाले एक सशक्त, फायरब्रांड नेतृत्व के रूप में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की; अथवा तीसरे कार्यकाल में भी उसी जोश और उत्साह से कार्य कर रहे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की-ये सभी आज भी स्वयं को भाजपा के कार्यकर्ता के रूप में ही प्रस्तुत करते हैं। एक कार्यकर्ता को भी महत्व देना, परिवारवाद या वंशवाद की राजनीति को यथासंभव दूर रखना, राष्ट्रवाद की विचारधारा के प्रति समर्पण, लोकतंत्र को बनाए रखने का संकल्प, संघर्षशीलता और पार्टी के साथ देश को आगे ले जाने की दूरदृष्टि-ये सभी तत्व भाजपा की अब तक की सफलता के प्रमुख आधार रहे हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव से लेकर राज्यों में मुख्यमंत्री के चयन तक, राज्य की राजनीति से किसी नेतृत्व को केंद्र में लाने से लेकर किस दल के साथ गठबंधन करना है-इन सभी मामलों में भाजपा ने सही समय पर उचित निर्णय लिए हैं, और ये निर्णय सर्वसम्मति से लिए गए हैं।सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास के मंत्र के साथ भाजपा ने सामाजिक सुरक्षा और समावेशन को प्राथमिकता दी है। आयुष्मान भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृत्रि जैसी योजनाओं ने समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास की पहुँच सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। नारी सशक्तिकरण हेतु नारी शक्ति वंदन अधिनियम नई आपराधिक न्याय व्यवस्था-भारतीय न्याय संहिता स्वच्छ भारत मिशन, मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियान, तीन तलाक जैसे मुद्दों पर निर्णायक कदम और समान नागरिक संहिता की दिशा में प्रयास। इन पहलों ने भाजपा को कथनी और करनी में सामंजस्य रखने वाले दल के रूप में स्थापित किया है। भाजपा ने अपने वैचारिक एजेंडे को केवल घोषणाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे नीति और क्रियान्वयन में परिणत किया। अनुच्छेद 370 की व्यवस्था का समापन करते हुए जम्मू-कश्मीर को एक देश, एक संविधान के संकल्प से जोड़ना हो या अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के माध्यम से वर्षों पुराने धार्मिक विषय का समाधान न्यायिक आधार पर करते हुए जनभावनाओं का सम्मान करना-इन सभी निर्णयों ने भाजपा को एक निर्णायक नेतृत्व वाले दल के रूप में स्थापित किया है। वंदे मातरम् के 150 वर्षं को उत्साहपूवषक मनाने का संकल्प और इतिहास के भुला दिए गए नायकों को उचित स्थान दिलाने की जिम्मेदारी को समझना-यह भी भाजपा की कार्यशैली का महत्वपूर्ण पक्ष है। लगभग छह दशक पुराने नक्सलवाद के लाल आतंक की समस्या को जड़ से समाप्त करने, सामाजिक न्याय, समावेशन और सामाजिक सुरक्षा के कार्यों के साथ डिजिटल अर्थव्यवस्था, स्टार्टअप, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में भारत की प्रगति, नए भारत के निर्माण का संककप भाजपा सरकारों के समन्वित प्रयासों का परिणाम है।

भाजपा के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति ने भी नई ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं। 18वाँ जी20 शिखर सम्मेलन 2023 का सफल आयोजन, ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन में सक्रिय भूमिका, अमेरिका, रूस और यूरोपीय संघ के साथ मजबूत संबंध तथा ग्लोबल साउथ के नेतृत्व ने भारत को विश्व राजनीति के केंद्र में स्थापित किया है। कोविड-19 संकट के दौरान भारत की वैक्सीन कूटनीति और वैश्विक सहयोग ने देश की साख को और मजबूत किया। आज जब वैश्विक स्तर पर ऊर्जा संकट, युद्ध और आपूर्ति शृंखला जैसी चुनौतियाँ मौजूद हैं, तब भारत का स्थिर और उभरता हुआ स्वरूप भाजपा के नेतृत्व की प्रभावशीलता को दर्शाता है। प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा और सम्मान भी इसी नीति का परिणाम है। अंततः उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक भाजपा का कमल लगातार अपनी छटा बिखेर रहा है। इस विकास रथ और राष्ट्रवाद के विजय यज्ञ में हर भारतवासी स्वयं को सुरक्षित, संरक्षित और पोषित होता हुआ महसूस कर रहा है। 10 करोड़ से अधिक सदस्यों के साथ भाजपा आज 150 करोड़ भारतीयों के विश्वास का प्रतीक बन चुकी है। भाजपा का यह सफर दर्शाता है कि कैसे एक राजनीतिक दल अपने सिद्धांतों, संगठन और कार्यकर्ता शक्ति के बल पर राष्ट्र निर्माण का आधार बन सकता है। अपनी स्थापना के केवल पाँच दशकों के भीतर यह दल आज भारत के अतीत के गौरव, वर्तमान की उपलब्धियों और भविष्य की आकांक्षाओं का प्रतीक बन चुका है। 6 अप्रैल का यह स्थापना दिवस केवल एक स्मरण नहीं, बल्कि उस यात्रा का उत्सव है जिसने चप्पा-चप्पा भाजपा को भारत की धड़कन में परिवर्तित कर दिया।

–डॉ. योगेश शर्मा,
(लेखक संवैधानिक अध्येता और अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ हैं, सांत्रविन सभा की बहसों पर आधारित उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित है, जिसके लिए उन्हें 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्डस' में स्थान मिला है।)

परिवार के बिखराव को रोकना होगा

प्रो. कैलाश सोडाणी

परिवार प्रेम, त्याग एवं संस्कारों की जननी है। यही एकमात्र वह जगह है जहाँ प्रतिस्पर्धा के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। परिवार का मतलब माता-पिता, भाई-बहिन, पति-पत्नी-बच्चों की एक पवित्र पाठशाला। निस्वार्थ स्नेह एवं आपसी सम्मान की तस्वीर है परिवार। अप्रत्याशित समस्याओं एवं कठिनाइयों का समाधान है परिवार। यह मानव समाज की बुनियादी इकाई है, जो इसके सदस्यों को सुरक्षा, शांति, आर्थिक और भावनात्मक समर्थन प्रदान करती है। परिवार एक साथ रहने वाले लोगों का ऐसा समूह है, जो प्रेम, विश्वास और पारस्परिक सहयोग पर आधारित है। यह हमारी पहचान, संस्कार और संस्कृति का पहला केंद्र है। यह सफलता का आधार और जीवन की सबसे बड़ी पूंजी होती है। बच्चों का समाजीकरण परिवार के बड़े बुजुर्गों के सानिध्य में ही होता है। मजबूत और खुशहाल परिवार मेहनत, प्रतिबद्धता और संवाद से बनते हैं।

देश की गुलामी के दौरान पश्चिमी संस्कृति का प्रदार्पण हुआ। उसकी चकाचौंध में हम भारतीय संस्कृति से दूर होते गए। परिवार के सभी लोगों को साथ लेकर विकास की ओर बढ़ने के स्थान पर केवल स्वयं की खुशी का विचार मजबूत होने लगा। भारतीय संस्कृति में जहाँ बाघ-बकरी एक साथ, एक ही घाट पर पानी पीते थे, अब घाट पर उसका अधिकार होने लग गया जो ज्यादा ताकतवर है। पश्चिमी संस्कृति अपनाने वालों ने यह प्रोपेगेंडा फैलाना भी शुरू कर दिया कि भारतीय संस्कृति दकियानूसी है, बेकार है। आधुनिक एवं पाश्चात्य जीवन शैली उत्कृष्ट है। जब व्यक्ति की सोच ही केवल स्वयं के विकास पर आकर केंद्रित हो जाती है तो फिर परिवारों में बिखराव होना तय हो जाता है।

आज दुखद पक्ष यह है कि खुशहाली एवं सुरक्षा के प्रहरी परिवार बिखर रहे हैं, टूट रहे हैं और अपमानित हो रहे हैं। आपसी विश्वास एवं संवाद समाप्ति के कगार पर पहुंच गए हैं। संयुक्त परिवार की संस्कृति तो बहुत पहले ही समाप्त हो गई। अब तो एकल परिवार भी टूट रहे हैं। आर्थिक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाएँ, शहरीकरण, काम के लिए पलायन, पीढ़ियों में वैचारिक मतभेद, निजता की चाह और संवाद की कमी के कारण परिवार रूपी इकाई मृतप्राय होती जा रही है। युवा पीढ़ी स्वतंत्रता और बेहतर जीवन की चाह में परिवार से अलग होकर एकल परिवार की राह पर चल पड़े हैं।

दादा-दादी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची से अलग रहना तो हमारा समाज स्वीकार कर चुका है। अब तो भाई-भाभी में भी प्रेम के स्थान पर प्रतिस्पर्धा आ गयी है। चिन्ता की स्थिति तो यह बन रही है की निजता एवं आर्थिक स्वतंत्रता के चक्कर में पुत्र भी पिता से अलग रहना पसंद कर रहे हैं। पुत्र प्रेम में डूबा हुआ भारतीय पिता अपना संपूर्ण जीवन बेटे के लिए न्यौछावर कर देता है। जब तक कोई भारतीय, पिता नहीं बनता है तब तक ही वह स्वयं के लिए जीता है। जैसे ही वह बाप बनता है, सबसे पहले वह स्वयं को भूल जाता है और उसके जीवन का लक्ष्य बन जाता है – पुत्र की प्रगति। कोई भी पिता अपने पुत्र की हार को बर्दाश्त नहीं कर सकता है। दूसरी और आधुनिक जीवन शैली के पुत्र ने पता नहीं क्यों अपने माता-पिता की सेवा के कर्तव्य पथ से दूरी बना ली है। पुत्र के मन-मस्तिष्क में पितृ-मोह की तरंगे ही नहीं उठ रही है।

75 वर्ष की आजादी को भोगने के बावजूद भी मेरे देश के नागरिक आज भी अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा एवं अपने भोजन को कमजोर समझ रहे हैं। उसी क्रम में हमारे सांस्कृतिक मूल्यों से युक्त संस्कारों की पाठशाला परिवार के महत्व को भूलते जा रहे हैं। सैकड़ो वर्षों की गुलामी ने हमारी सोच एवं मानसिकता को जिस ढंग से कमजोर किया, अभी तक हम पुनः ठीक नहीं कर पाए हैं।

सौभाग्य से नई शिक्षा नीति-2020 में हमारे गौरवशाली पुरातन भारतीय संस्कृति को आवश्यक महत्व प्रदान किया है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षक की यह जिम्मेदारी बनती है कि वह बच्चों के मन मस्तिष्क से पाश्चात्य सोच के भूत को निकाल कर बाहर फैंके। बालक विद्यार्थी के रूप में लगातार 10-15 वर्षों तक शिक्षक के सानिध्य में रहता है। बच्चे को भारतीय संस्कृति के अनुरूप तैयार करने के लिए शिक्षक के पास पर्याप्त समयावधि है। संस्कारों की जननी परिवार के महत्व को प्रतिपादित करते हुए शिक्षक को उसे टूटने एवं बिखरने से रोकना होगा।

–प्रो. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलगुरु,
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

नीमकाथाना के युवा प्रथम जिंदल ने यूके में रचा इतिहास

पर्यावरण प्रोजेक्ट को मिली अंतरराष्ट्रीय फंडिंग

पाटन। राजस्थान के सीकर जिले के नीमकाथाना से निकलकर एक युवा ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। प्रथम जिंदल ने ब्रिटेन में अपने अभिनव पर्यावरण प्रोजेक्ट के जरिए देश का नाम रोशन किया है।प्रथम जिंदल, जो में अध्ययनरत हैं, वर्तमान में के सहयोग से 'कार्बन गार्डन प्रोजेक्ट' पर कार्य कर रहे हैं। यह प्रोजेक्ट पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक अनूठी पहल है, जिसके तहत एक ऐसा सिस्टम विकसित किया जा रहा है जो आम नागरिकों को यह समझने में मदद करेगा कि

नीमकाथाना के युवा प्रथम जिंदल ने पर्यावरण संरक्षण में यूके में अपनी पचान बनाई है।

उनके द्वारा लगाए या खरीदे गए पौधे वातावरण से कितनी कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर सकते हैं।यह परियोजना न केवल पौधारोपण को प्रोत्साहित करती है, बल्कि लोगों को उनके दैनिक जीवन में होने वाले प्रदूषण-विशेष रूप से वाहनों से निकलने वाले धुएं-की भरपाई के प्रति भी जागरूक करती है।प्रथम जिंदल के इस नवाचार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बड़ी सराहना मिली है। उनके 'कार्बन गार्डन प्रोजेक्ट' को के प्रतिष्ठित - कार्यक्रम के अंतर्गत विशेष फंडिंग प्रदान की गई है, जो इस परियोजना के वैश्विक महत्व और उपयोगिता को दर्शाती है।प्रथम के पिता योगेश जिंदल और माता श्वेता जिंदल के लिए यह उपलब्धि गर्व का क्षण है। वहीं, नीमकाथाना सहित पूरे क्षेत्र में खुशी की लहर है।यह सफलता इस बात का प्रेरणादायक उदाहरण है कि छोटे शहरों से आने वाले युवा भी अपनी सोच, मेहनत और नवाचार के दम पर वैश्विक स्तर पर पहचान बना सकते हैं।अगर सोच नई हो और इरादे मजबूत, तो छोटे शहर की पहचान भी पूरी दुनिया में बनाई जा सकती है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 6 अप्रैल, 2026

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, चतुरथी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2083, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 2:57 तक, सिद्धि योग दिन 3:25 तक, बालव करण दिन 2:11 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मीन, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:57 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:50 तक, शुभ 9:23 से 10:56 तक, चर 2:03 से 3:36 तक, लाभ-अमृत 3:36 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:16, सूर्यास्त 6:42

मेष
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आज आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन हो सकता है।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक मामलों में महत्वपूर्ण परामर्श मिल सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज व्यावसायिक प्रयासों में सार्थक/उचित सफलता मिलेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन
नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।